मातम और अज़ादारी क्यों?

लेखक: शेख नज्मुद्दीन तबसी

अनुवादक: सय्यद अबरार अली जाफ़री (मंचरी)

नाशिर: अबू तालिब (अ.स) इंटरनॅशनल इस्लामिक इंस्टिट्यूट

पेश लफ़्ज़ (पहली बात)

मरने वालों पर रोना और उन का सोग मनाना एक ऐसा अमल है जिस का सरचश्मा (स्रोत) इन्सान के पाकीज़ा एहसासात और रुह (आत्मा) है. इस्लाम मज़हब भी फ़ितरी और इन्सानी अमल की ताईद और ताकीद फ़रमाता है और इस का सबसे बड़ा गवाह ख़ुद सीरते पैग़म्बर (स) है. इस के अलावा सहाबा-ए-किराम और मुसलमानों की रविश (कार्यशैली) हमारे पास एक बहुत बड़ा मंबा (स्रोत) है. इस छोटीसी किताब में हमारी पूरी बातचित का मंबा (स्रोत) व महवर वह रिवायतें हैं जो इस सिलसिले में लिखी गई हैं और इन्ही के ज़रीए से सोग व ग़म मनाना साबित किया गया है. यह बात छुपी ना रहे कि कुछ लोगों ने ज़ईफ़ रिवायातों का सहारा लेते हुए इस अमल को हराम होने का फ़तवा भी दिया हैं. लिहाज़ा हम दोनों क़िस्म की रिवायातों की वज़ाहत (व्याख्या) करेंगे.

नज्मुद्दीन तबसी

ब मुनासिबत रोज़े शहादते हज़रते ज़हरा (स.अ)

रोने की नसीहत

मरने वालों पर रोना, ग़म का इज़हार करना, उन का सोग़ मनाना एक ऐसा अमल है जो इन्सान के पाकीज़ा एहसासात से तअल्लुक़ रखता है और मुसीबत ज़दा की तस्लियत व दिलजूई और उस के दिल को जज़्ब करने का कारण बनता हैं और यह वह अमल है जिस की ताईद और ताकीद ख़ुद रसूले ख़ुदा (स) ने फ़रमाई, सीरते पैग़म्बर (स) में इस के बहुत से नमूने मौजूद हैं.

ओसामा बिन ज़ैद कहते हैं: जब पैग़म्बर (स) की मुँह बोली बेटी के फ़रज़न्द की वफ़ात हुई तो उसने पैग़म्बर (स) को इस की ख़बर दी, तो पैग़म्बर (स), सअद बिन उबादा, मआज़ बिन जबल, उबैई बिन कअब, ज़ैद बिन साबित और कुछ असहाब के साथ उसके घर पहुँचे, पैग़म्बर (स) ने बच्चे को उठाया और बहुत रोए यहाँ तक कि आसू चेहर-ए-मुबारक पर जारी होने लगे, यह देखकर सअद बिन उबादा ने तअज्जुब से अर्ज़ किया:

आप किस लिए रो रहे हैं?

तब आप (स) ने फ़रमाया: यह इस बच्चे पर मेहरबानी के सबब है जो ख़ुदावन्दे करीम ने अपने बन्दों के दिल में डाल रखी है और ख़ुदावन्दे करीम अपने मेहरबान बन्दों पर रहमत फ़रमाता है.[1]

जंगे ओहद के बाद जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे व आलेहि व सल्लम मदीना की तरफ़ रवाना हुए तो देखा कि मदीना की औरतें अपने शोहदा की जुदाई में रो रही हैं तो पैग़म्बरे इस्लाम (स) ने यह सुनकर अपने चचा हज़रत हम्ज़ा की शहादत और मज़लूमियत को याद करते हुए यह फ़रमाया:

सब पर रोने वाले तो हैं मगर मेरे चचा हम्ज़ा पर रोने वाला कोई नहीं है.

जैसे ही पैग़म्बर (स) की ज़बाने मुबारक पर यह दर्दभरा जुमला जारी हुआ तो फिर हालात बदल गये और अन्सार की औरतों ने जनाबे हम्ज़ा पर रोना शुरू किया.

1 सुनने निसाई, जिल्द 4, पेज 22 / सहीह बुख़ारी, जिल्द 1, पेज 223

इब्ने अब्दुल बर्र कहते हैं: आज तक अन्सार की औरतें पहले जनाबे हम्ज़ा पर रोती हैं फिर अपने मरने वालो पर रोती हैं.[1]

जंगे मौता में जाफ़र बिन अबू तालिब (र.अ) की शहादत के बाद जब पैग़म्बर (स) उन के घर तशरीफ़ ले गये ताकि उन के घर वालों को तसल्ली दे सकें तो आप (स) ने वहाँ निकलते वक़्त एक तारीख़ी जुमला इरशाद फ़रमाया:

रोने वालों को चाहिए कि वह जाफ़र जैसे शहीदों पर रोए.[2]

रोने की मुख़ालिफ़त करने वाले एहसासात व अवातिफ़ से ख़ाली नज़रियात का पैग़म्बर (स) के यहाँ कोई मक़ाम नहीं था. एक दिन पैग़म्बर (स) एक मुसलमान की तशई-ए-जनाज़े के लिये तशरीफ़ ले गये तो वहाँ पर उमर बिन ख़त्ताब भी मौजूद थे जैसे ही हज़रत उमर ने औरतों की उस जनाज़े पर

---

1 अल इसतिआब, क़ुरतुबी, जिल्द 1, पेज 275 / मुसनदे अहमद, जिल्द 2, पेज 40 / शिफ़ा उल ग़िराम, जिल्द 2, पेज 347

2 अन्साबुल अशराफ़, बिलाज़री, जिल्द 2, पेज 298

रोने की आवाज़ को सुना तो उन्हें रोने से मना किया, जब पैग़म्बर (स) ने देखा तो अपनी ज़बाने तर्जुमाने वही से इस तर्ज़े फ़ीक्र की नफ़ी करते हुए इस तरह फ़रमाया:

ऐ उमर! उन्हें उन के हाल पर छोड़ दो, इसलिये कि आँख अश्कबार है और दिल मुसीबत ज़दा और ज़ियादा वक़्त भी नहीं गुज़रा.[1]

सीरते रसूले ख़ुदा (स)

वह लोग जो दामने अक़्ल से वाबस्ता और इश्क़े रिसालत (स) से सरशार हैं उन की ख़िदमत में सीरते नबी (स) से मज़ीद चन्द नमूने पेश कर रहे हैं ताकि उन की नस्ल ख़वारीज (नासिबीयों) के शर्र से अपने अक़ाएदे हक़ की हिफ़ाज़त कर सकें.

1 मुसतदरके हाकिम, जिल्द 1, पेज 381 / मुसनदे अहमद, जिल्द 2, पेज 323 / कंज़ुल उम्माल, जिल्द 15, पेज 621

जनाबे अब्दुल मुत्तलिब (अ.स) पर गिरया:

जनाबे उम्मे ऐमन (स.अ) बयान करती हैं:

मैंने रसूले ख़ुदा (स) को अपने जद जनाबे अब्दुल मुत्तलिब के जनाज़े के साथ चलता देखा जब कि आप रो रहे थे.[1]

जनाबे अबू तालिब (अ.स) पर गिरया:

हामी व नासीरे दीने ख़ुदा, निगहबाने रिसालत, निकाह ख़्वाने मुस्तफ़ा (स), वालिदे शेरे ख़ुदा हज़रत अबू तालिब (अ.स) का जब इन्तेक़ाल हुआ तो देखा कि उन लम्हों में क़ायनात के अज़ीम पैग़म्बर (स) ने अपने भाई हैदरे कर्रार से फ़रमाया: ऐ अली! मेरे इस प्यारे चचा अबू तालिब (अ.स) को ग़ुस्ल व कफ़न दो, ख़ुदा उन्हें ग़रीक़े रहमत फ़रमाए. आप (स) ने अपने अज़ीम साहिबे ईमान व साहिबे किरदार चचा की वफ़ात पर बुलन्द आवाज़ में गिरया फ़रमाया.[2]

---

1 तज़किरतुल ख़वास, पेज 7

2 अत्तबक़ातुल कुबरा, इब्ने सअद, जिल्द 1, पेज 123

जनाबे आमिना (स.अ) पर गिरया:

तारीख़े इस्लाम में मिलता है कि जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे व आलेहि व सल्लम अपनी वालिदा-ए-मुहतरमा बीबी आमिना (स.अ) की क़ब्रे पाक पर तशरीफ़ लाये तो बेसाख़्ता ख़ुद भी गिरया फ़रमाया और जो साथ थे उन को भी रुलाया.[1]

जनाबे इब्राहीम पर गिरया:

ख़ालिक़े क़ायनात ने अपने प्यारे हबीब (स) को मदीन-ए-मुनव्वरा में एक ख़ूबसूरत सा बेटा अता फ़रमाया था वह जो एक साल का हुआ था अपने वालिदे गिरामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहे व आलेहि व सल्लम को दाग़े मुफ़ारिकत देकर दुनिया से चल बसा. जब आप (स) ने अपने प्यारे बेटे पर गिरया फ़रमाया तो बाज़ लोग तअज्जुब करने लगे, तो आप (स) ने उन के इस तअज्जुब को दूर करने की ख़ातिर ऐसा रूह परवर जुमला इरशाद

---

1 अल मुसतदरक, जिल्द 1, पेज 357 / तारीख़ुल मदीना, इब्ने शब्बा, जिल्द 1, पेज 118

फ़रमाया ताकि सुबहे क़यामत तक किसी को तनक़ीद की हिम्मत ना हो सके. आप (स) ने फ़रमाया:

आँखें अश्कबार और दिल ग़म ज़दा हैं अलबत्ता हम अपनी ज़बान पर ऐसी बात हरगिज़ जारी नहीं करते जो ख़ुदावन्दे आलम की नाराज़गी का सबब बने.[1]

जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद (स.अ) पर गिरया:

जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद (स.अ), हज़रत अबू तालिब (अ.स) की ज़ौजा, हज़रत अली (अ.स) की वालिदा-ए-मुहतरमा और रसूले ख़ुदा (स) की चची जान थीं. हमेंशा रसूले ख़ुदा (स) के लिबास व ख़ुराक का ख़ास ख़याल रखा करती थीं, वह उन्हें सरमाया-ए-ईमान जबकि रसूले ख़ुदा (स) उनको अपनी माँ कहा करते थे, जब आप (स) की उस मेहरबान, शफ़ीक़ और साहिबे ईमान चची का इन्तेक़ाले पुर

1 अल अक़्दुल फ़रीद, जिल्द 3, पेज 19

मलाल हुआ तो उन के इस दाग़े मफ़ारिकत पर कायनात के रहमतुलिल आलमीन पैग़म्बर (स) ने बेहद गिरया किया और अपने क़ल्बी दुख का इज़हार फ़रमाकर ग़म और अज़ादारी को शरई हैसीयत अता फ़रमादी.

“ज़ख़ाएरुल उक़बा” में लिखा है: पैग़म्बर (स) ने अपनी चची जान पर ख़ुद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, उन की पाक क़ब्र में पहले बतौर बरकत ख़ुद लेटे और फिर उन के हक़ में दुआ-ए-मग़फ़िरत फ़रमाई जब कि अपनी प्यारी चची के ग़म में आँखें अश्कबार और दिल ग़म ज़दा था.[1]

जनाबे हम्ज़ा (अ.स) पर गिरया:

रसूले ख़ुदा (स) के अज़ीम और मेहरबान चचा हज़रत हम्ज़ा (अ.स) जो कुफ़्र के मद्दे मुक़ाबिल इस्तेक़ामत के पहाड़ और पैकरे इख़लास व मुहब्बत थे. जंगे बद्र में दादे शुजाअत वसूल करने के बाद

1 ज़ख़ाएरुल उक़बा, पेज 56

जंगे ओहद के मारके में अपनी जान को राहे ख़ुदा और रसूल (स) पर निसार कर दिया.

हिन्दा ने अपनी कीने की आग को ठंडा करने के लिये उन के जिस्मे अतहर को मुस्ला करवा के उन के कलेजे को अपने नापाक दातों से चबाया और उन के ख़ून को पी लिया, इस अज़ीम मुसीबत पर आप (स) ने हुक्म दिया कि मेरे उस अज़ीम चचा पर गिरया और अज़ादारी की जाये.

जब पैग़म्बर (स) ने अपने चचा को मक़तूल पाया तो गिरया व ज़ारी की और जब उन्हें मुस्ला देखा तो धाड़ें मार कर रोये.[1]

असहाब की जुदाई पर गिरया:

पैग़म्बर (स) के क़ल्बे अतहर को उन के बाज़ दोस्तों की जुदाई व फ़िराक़ ने रंजीदा किया. ग़ज़वा-ए-हमरा अल असद से वापसी पर आप (स) शोहदा-ए-ओहद में से एक शहीद सअद बिन रबी के घर तशरीफ़ ले गये. आप (स) ने उन की जानिसारी के

---

1 अस्सिरतुल हलबिया, जिल्द 2, पेज 247

तज़किरे से ख़ुद को और उन के ख़ानवादे को भी रुला दिया और उन की बे मिसाल क़ुर्बानी व फ़िदाकारी को याद करके उन के ख़ानदान के ग़म को ताज़ा किया.[1]

जनाबे उस्मान बिन मज़उन की मौत पर पैग़म्बर (स) ने गिरया किया और उन की लाश का बोसा लिया.[2]

रविशे असहाब

तारीख़ गवाह है कि असहाबे पैग़म्बर (स) अपने अज़ीज़ों के मरने पर रोया करते और ग़म मनाते थे. आप (स) की वफ़ात हुई तो पूरा मदीना उन के ग़म में सोग़वार व नौहाकुना था, हर आँख अश्कबार थी.[3] हज़रत आयेशा फ़रमाती हैं के रसूले ख़ुदा (स) की

1 अल मग़ाज़ी, जिल्द 1, पेज 329

2 अल मुसतदरक अलस्सहीहैन, जिल्द 1, पेज 261 / सुननुल कुबरा, जिल्द 3, पेज 407

3 अख़बारे मक्का, फ़ाकही, जिल्द 3, पेज 80

वफ़ात के मौके पर मैंने मदीना की औरतों से मिलकर अपना सीना और सर पीटा.[1]

अब्दुल्ला बिन रवाह ने जनाबे हम्ज़ा पर गिरया किया और उन से मुतअल्लिक़ अशआर कहे.[2]

इब्ने अबी शैबा लिखते हैं: जब हज़रत उमर को नोअमान बिन मक़रन की वफ़ात की ख़बर दी गई तो उन्होंने अपने को थाम कर गिरया व ज़ारी की.[3]

इसी तरहा हज़रत अब्दुल्ला बिन मसउद ने हज़रत उमर पर गिरया किया.[4]

1 अस सीरतुन नबविया, जिल्द 4, पेज 305

2 अस सीरतुन नबविया, जिल्द 3, पेज 171

3 अल मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा, जिल्द 3, पेज 175

4 अल अक़्दुल फ़रीद, जिल्द 4, पेज 283

अफ़सान-ए-हुरमते मातम

बड़े अफ़सोस के साथ यह कहना पड़ता हैं कि बाज़ अहले सुन्नत उलमा ने इस सुन्नते रसूल (स) और सीरते असहाब के ख़िलाफ़ फ़तवा भी सादिर किया जब कि उन मुबारक हदीसों के मुतालेआ (अध्ययन) करने से साफ़ व वाज़ेह हो जाता है कि गिरया व मातम के हराम होने का फ़तवा सिवा एक अफ़साने के कुछ नहीं है जिस के लिये उन्होंने चन्द ज़ईफ़ रिवायात का सहारा लिया है जिन्हें आप मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे. हम मातम और सोगवारी के हराम होने की रिवायात को बयान करने के बाद उन का जवाब भी बयान करेंगे और फिर आख़िर में उन का नतीजा ज़िक्र किया जाएगा:

रिवायाते मुख़ालिफ़:

गिरया और मातम के मुख़ालिफ़ीन ने इस के जाएज़ ना होने पर चन्द एक रिवायात नक़्ल की हैं जो यह हैं:

1) इस बात की निसबत जनाबे रसूले ख़ुदा (स) की तरफ़ दी गई है कि:

A) अगर मरने वाले पर कोई रोए तो मरने वाले को अज़ाब मिलता है.[1]

B) मय्यत अपने उपर गिरया करने वालों की वजह से अज़ाब में मुबतिला होती है.[2]

1 सहीह बुख़ारी, जिल्द 1, पेज 223 / किताबुल जनाएज़, सहीह मुस्लिम, जिल्द 3, पेज 44 / किताबुल जनाएज़, जामेउल उसूल, जिल्द 11, पेज 99, शुमारा 857

2 सहीह बुख़ारी, जिल्द 1, पेज 223 / किताबुल जनाएज़, सहीह मुस्लिम, जिल्द 3, पेज 44 / किताबुल जनाएज़, जामेउल उसूल, जिल्द 11, पेज 99, शुमारा 857

2) सअद बिन मुसय्यब कहते हैं: हज़रत आयेशा ने जब हज़रत अबू बकर की वफ़ात के मौके पर एक मजलिसे सोगवारी का एहतमाम किया, जहाँ बहुत सी औरतें आकर उनको पुरसा दिया करती थी. जब हज़रत उमर को इस का इल्म हुआ तो उन्होंने उन को मना किया मगर हज़रत आयेशा ने उमर के इस हुक्म की मुख़ालिफ़त की जिस के रद्दे अमल में हज़रत उमर ने हिशाम बिन वलीद को यह ज़िम्मेदारी सौंपी कि वह हज़रत आयेशा के पास जायें और उन औरतों को कोड़े मारकर रोने और मातम करने से रोकें. जैसे ही यह ख़बर उन औरतों तक पहुँची तो वह सब मजलिस से मुन्तशिर हो गईं. उस वक़्त हज़रत उमर ने उन से कहा:

वाय हो तुम औरतों पर क्या तुम अबू बकर को रो कर अज़ाब देना चाहती हो? बेशक मय्यत को उस पर रोने वालों की वजह से अज़ाब दिया जाता है.[1]

1 सहीह तिरमिज़ी, हदीस नंबर 1002

3) हज़रत आयेशा बयान करती हैं: जब जनाबे जाफ़र बिन अबी तालिब, ज़ैद बिन हारीस और अब्दुल्ला बिन रवाह की शहादत की ख़बर पैग़म्बर (स) तक पहुँची तो आप (स) के चेहरे पर ग़म व मलाल के आसार ज़ाहिर हुए, एक शख्स ने आकर हुज़ूर (स) के पास शिकायत की कि कुछ औरतें उन पर गिरया कर रही हैं तो आप (स) ने फ़रमाया:

लौट जा और उन को ख़ामोश करवा दे अगर वह नहीं मानी तो उन के चेहरों पर मिट्टी फेंकना.[1]

4) नस्र बिन अबी आसीम कहते हैं: एक रात हज़रत उमर ने मदीना में एक औरत के रोने की आवाज़ उस के घर से सुनी तो फ़ौरन उस के घर में दाख़िल हो गये और वहाँ पर मौजूद सभी औरतों को वहाँ से भगा दिया लेकीन गिरया करने वाली औरत पर ताज़ियाने (कोड़े) बरसाए यहाँ तक कि उस की चादर उस के सर से गिर गई. साथियोंने एतराज़

---

1 अल मुसन्नफ़, इब्ने अबी शैबा, जिल्द 3, पेज 265

किया और कहा कि इस के सर के बाल नंगे हो गये? तो जवाब में हज़रत उमर ने कहा:

हाँ, यह औरत लायक़े एहतराम नहीं है.[1]

रिवायात पर एक नज़र

अब हम चंद ज़ईफ़ रिवायात पर जो क़ुरआन और सुन्नत के मोतबर (भरोसेमन्द) हवाले जात के मुक़ाबले में बयान की गई हैं एक नज़र और ख़ुलासा करते हैं.

1) पहले हम हज़रत आयेशा की राय को नक़्ल करेंगे कि आप उन गुज़श्ता रिवायात को ग़ैर मोतबर समजती थीं और उन के रावियों के बारे में उन की राय यह थी कि उन्होंने नक़्ल करने में या तो गलती की है या फिर उन से भूल चूक हो गई है. जनाबे नववी इस सिलसिले में लिखते हैं:

जो उपर रिवायात बयान हुई हैं वह हज़रत आयेशा के यहाँ क़ाबिले क़ुबूल नहीं हैं, उन्होंने उन

1 कंज़ुल उम्माल, जिल्द 15, पेज 731

के रावियों को फ़रामोशी (भूलने) की निसबत दी है चूँकि हज़रत उमर और उन के बेटे अब्दुल्ला ने उन रिवायात को सही तरीके से पैग़म्बर (स) से नहीं लिया है जैसा कि अब्दुल्ला इब्ने अब्बास भी फ़रमा चुके हैं कि यह रिवायात हज़रत उमर की अपनी हैं न कि फ़रमाने पैग़म्बर (स).[1]

इस सिलसिले में कुछ रिवायात को नक़्ल करना मुनासिब होगा:

A) इब्ने मलीका की रिवायत पर ज़रा ग़ौर फ़रमाएं जिस को अहमद बिन हंबल और बहुत से मुअर्रिख़ीन (इतिहासकारो) ने नक़्ल किया है जो हराम क़रार देने वाली रिवायात को जअली (नकली) क़रार देते है. वह बयान करता है कि हज़रत उस्मान के बेटों में से एक का इन्तेक़ाल हो गया हमने उस की तशई-ए-जनाज़े में शिरकत की जबकि हमारे साथ अब्दुल्ला बिन उमर, और हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास भी जनाज़े में शरीक थे उस वक़्त अब्दुल्ला बिन उमर ने लोगों के रोने का शिकवा किया उस

1 शरहुन नववी, जिल्द 5, पेज 308

वक़्त हज़रत उस्मान के बेटे ने अब्दुल्ला बिन उमर से कहा: तुम लोगों को रोने से क्यों मना कर रहे हो? जवाब में इब्ने उमर ने कहा कि मैनें रसूले ख़ुदा (स) से सुना हैं कि रोने से मुर्दे को अज़ाब मिलता हैं, हज़रत इब्ने अब्बास जो पास ही में खड़े थे यह सुनकर इब्ने उमर की तरफ़ अपना रूख़ (मुँह) किया और फ़रमाया: यह बात जो तुम कह रहे हो यह तो हज़रत उमर ने कही है जब वह शिद्दते ज़ख़्म की वजह से लेटे हुए थे तो सहीब उन के पास खड़ा होकर गिरया करने लगा, सहीब के रोने से हज़रत उमर नाराज़ हुए और उस से कहने लगे तुम मुझ पर रो रहे हो जबकि रसूले ख़ुदा (स) ने रोने से मना किया है. रोने से मुर्दे पर अज़ाब होता है. इब्ने मलीका कहता है फिर जब हज़रत उमर फ़ौत हो गये तो मैंने इस बात को हज़रत आयेशा से नक़्ल किया, जवाब में हज़रत आयेशा ने फ़रमाया:

ख़ुदा उमर पर रहमत करे ख़ुदा की क़सम पैग़म्बर (स) ऐसी बात अपनी ज़बान पर हरगिज़ नहीं ला सकते बल्कि आप (स) ने तो यह फ़रमाया कि ख़ुदावन्दे आलम काफ़िर पर अज़ाब में उस के घर

वालों के उस पर रोने की वजह से इज़ाफ़ा कर देता है.

हज़रत आयेशा ने इस बात को इस जुमले के साथ मुकम्मल फ़रमाया:

इस बात को समझने के लिए तुम्हारे पास क़ुरआन की आयत ही काफ़ी है कि किसी शख्स को दूसरे के गुनाह की सज़ा नहीं दी जाएगी.[1] उस वक़्त हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास ने इस बात की इस जुमले से मज़ीद ताकीद फ़रमाई कि परवरदिगार ही रूलाता और हँसाता है. इस पुर माजरा का रावी इब्ने मलीका आख़िर में कहता है: जैसे ही अब्दुल्ला इब्ने अब्बास की बात मुकम्मल हुई तो अब्दुल्ला इब्ने उमर ख़ामोश हो गया फिर उस ने इस के बाद कोई बात नहीं की.[2]

B) एक दिन हज़रत आयेशा के सामने अब्दुल्ला बिन उमर की इस बात का तज़किरा हुआ कि पैग़म्बर (स) से नक़्ल किया गया है कि मय्यत पर

---

1 सूरए फ़ातिर, आयत नंबर 18

2 मुसनदे अहमद, जिल्द 1, पेज 41 / जामेउल उसूल, जिल्द 11, पेज 99

रोने से कब्र में उस पर अज़ाब नाज़िल होता है, तो जवाब में हज़रत आयेशा फ़रमाती हैं:

उमर का बेटा भूल गया है बल्कि रसूले ख़ुदा (स) ने तो इस तरह फ़रमाया है कि मुर्दे को तो उस के गुनाह की वजह से अज़ाब हो रहा होता है जबकि रिश्तेदार उस पर रो रहे होते हैं.[1]

C) हज़रत आयेशा ने एक और मक़ाम पर दावा किया है कि:

हज़रत उमर और उन के बेटे ने पैग़म्बर (स) पर झूठ नहीं बोला बल्कि उन्होंने पैग़म्बर (स) से यह रिवायत सुनने में गलती की है.[2]

D) हज़रत आयेशा ने यह हक़ीक़त बयान की है कि: एक दिन रसूले ख़ुदा (स) एक क़ब्र के पास से गुज़र रहे थे कि उस मुर्दे के रिश्तेदार उस की क़ब्र पर खड़े वहाँ रो रहें थे, आप (स) ने फ़रमाया कि

1 शरहुन नववी, जिल्द 5, पेज 308

2 मुसनदे अहमद, जिल्द 1, पेज 42 / जामेउल उसूल, जिल्द 11, पेज 93, शुमारा 8563

कोई शख़्स दूसरे के आमाल का बोझ अपने कंधों पर नहीं लेगा.[1]

2) वह रिवायत कि जिसमें हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब पर गिरया करने वालों को मना किया गया है हक़ीक़त से ख़ाली है इसलिए कि:

A) पहली बात तो यह है कि यह रिवायत उन रिवायात से टकराती है जिन में हज़रत रसूले ख़ुदा (स) ने गिरया करने कहा है.[2]

B) इस रिवायत की सनद में मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन यसार बिन ख़ियार मौजूद है जो उलमा-ए-रिजाल और तमाम मुहद्दिसीन की नज़र में मोतबर (भरोसेमन्द) नहीं है सब ने इस की रिवायात को जअली (नकली) और ज़ईफ़ क़रार दिया है.[3]

---

1 सहीह बुख़ारी, जिल्द 1, पेज 223 / इरशादुस्सारी, जिल्द 2, पेज 404

2 सुनने निसाई, जिल्द 4, पेज 19 / मुसनदे अहमद, जिल्द 2, पेज 323 / अल मुसतदरक अलस्सहीहैन, जिल्द 1, पेज 381

3 तहज़ीबुल कमाल, जिल्द 16, पेज 70 से 80 तक

3) नस्र बिन अबी आसीम से जो रिवायात ज़िक्र की गयी हैं वह इन वजुहात की बुनियाद पर ज़ईफ़ और ना क़ाबिले एतमाद है.

A) इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन यह्या इस रिवायत के रावियों में एक बहुत ही झूठा शख़्स मौजूद है, वह कहता है इस की रिवायात बे बुनियाद हैं जिन में कोई हक़ीक़त नहीं है. बशर बिन मुफ़ज़्ज़ल कहता है: मैंने इस के मुतअल्लिक़ मदीना के फ़ुक़हा से पूछा तो सब ने एक ज़बान होकर इसे कज़्ज़ाब और झूठा क़रार दिया और “लैसा सिक़ा” कहा यानी क़ाबिले एतमाद नहीं है.[1]

B) इस रिवायत में एक ना महरम औरत के घर में हज़रत उमर का दाख़िल होना इस हाल में कि उस को इतने कोड़े मारे गये कि उस की चादर तक उस के सर से गिर गयी.

हाँ अगर इस वाक़ेआ को मान लिया जाये तो यह और एक तल्ख़ वाक़ेआ की याद को ताज़ा करता है, जिस में ख़ान-ए-ज़हरा (स.अ) पर हमला किया गया.

1 तहज़ीबुल कमाल, जिल्द 1, पेज 420

C) अगर मान भी लिया जाये फिर भी उनका अमल दूसरों के लिये हुज्जत नहीं क्योंकि कोई भी उन की इस्मत (माअसूम) का मुद्दई नहीं है. यहाँ तक कि इमाम ग़ज़ाली जैसा बड़ा आलीम भी हज़रत अबू बकर व उमर के क़ौल या अमल को दूसरों के लिये हुज्जत मानने को तैयार नहीं.[1] उनका यह अमल सुन्नते रसूले ख़ुदा (स) से तआरुज़ (टकराव) रखता है, क्योंकि रसूले ख़ुदा (स) का वाज़ेह व साफ़ फ़रमान इस सिलसिले में आप जान चुके हैं कि आप (स) ने फ़रमाया:

ऐ उमर उन औरतों को रोने दो उन्हें रोने से मत रोको.[2]

और ख़ुद हज़रत आयेशा ने इस मसले में ख़ता और भूलने की निसबत हज़रत उमर की तरफ़ दी.[3]

---

1 अल मुसतसफ़ा, जिल्द 1, पेज 260 / दरासातु फ़िक़हिया फ़ी मसाएल ख़िलाफ़िया, पेज 138

2 मुसनदे अहमद, जिल्द 2, पेज 323

3 अल मजमूआ लिन्नववी, जिल्द 5, पेज 308

नतीज-ए-बहस

अगर उपर दिये रिवायात में ज़रा ग़ौर किया जाये तो इस का सिलसिला ज़ियादा से ज़ियादा हज़रत उमर और उन के बेटे अब्दुल्ला बिन उमर पर ही जाकर ख़त्म हो जाता है. और अगर हज़रत आयेशा की इस बात को ख़ुशबीनी के साथ क़ुबूल कर लिया जाये कि इस रिवायात के समझने में हज़रत उमर या उन के बेटे से ख़ता या भूल वाक़ेअ हुई तो हम नतीजे तक आसानी से पहुँच सकते हैं कि हुज़ूरे अक़रम (स) ने कभी भी रोने और अज़ादारी करने से मना नहीं किया बल्कि इस अमल को अपने क़ौल व फ़ेल से ताईद और ताकीद फ़रमाई और इसे शरई हैसीयत अता फ़रमाई. ख़ास तौर पर अगर उन अहादीसे नबवी (स) की तरफ़ मुतवज्जे हों जिन में शोहदाए करबला का ग़म मनाने पर अज्र व सवाब बयान फ़रमाया तो हर मुसलमान इस इबादत और सवाब को अंजाम देने के लिये ख़ुसूसी एहतमाम फ़रमाएगा. और वह रिवायात जो मय्यत के अज़ीज व अक़ारीब के गिरया करने पर उस के अज़ाब में इज़ाफ़े को बयान कर रही हैं उन का मिसदाक़

काफ़िर की मय्यत है और वह किसी भी सूरत में मुसलमान मरने वाले को शामिल नहीं हैं.

तारीख़ी बहस

गिरया व अज़ादारी, नौहा व मरसिया ख़्वानी और सोगवारी तारीख़े इस्लाम का एक अहम हिस्सा रहा हैं जिस का अमली नमूना पुरानी तारीख़ी किताबों में बहुत ज़ियादा मौजूद है जिन में से एक नमूना यह है, जैसे तारीख़े तबरी की जिल्द नं. 3, पेज नं. 341, पर नक़्ल किया गया है कि शहादते इमाम हुसैन (अ.स) की ख़बर जब अहले मदीना तक पहुँची तो उन लोगों का रद्दे अमल यह था जैसा तबरी ने एक रावी से नक़्ल किया है कि वह कहता हैं:

ख़ुदा की क़सम हुसैन (अ.स) पर बनू हाशीम की औरतों की गिरया व ज़ारी की मानिन्द मैंने कोई नाला व आहोज़ारी नहीं सुनी थी.[1]

इब्ने कसीर बयान करते हैं: सिब्ते इब्ने जौज़ी से आशूरा (दसवीं मुहर्रम) के दिन तक़ाज़ा किया गया

1 तारीख़े तबरी, जिल्द 3, पेज 341, 342

कि आप मिम्बर पर जाकर इमाम हुसैन (अ.स) के मसाएब (ग़म का ज़िक्र) बयान करें, उन्होंने दमिश्क में मिम्बर पर जा कर कुछ अशआर पढ़ें जिनका तर्जुमा यह बनता है: अफ़सोस हो उन लोगों पर जिन की शफ़ाअत करने वाले उन के दुश्मन हों, उस वक़्त जब रोज़े क़यामत लोगों को क़ब्रों से निकालने के लिये सूर फूँका जायेगा.

रोज़े महशर सय्यदा ज़हरा (स.अ) के हाथों में अपने बे गुनाह व मज़लूम बेटे हुसैन बिन अली (अ.स) का ख़ून से भरा कुर्ता होगा, यह बयान करते हुए इब्ने जौज़ी अश्कबार आँखों से मिम्बर से नीचे उतर आये और गिरया करते हुए घर वापस लौट गये.[1]

तारीख़ में इस तरह के बहुत से नमूने ज़िक्र हुए हैं जिन में से चन्द एक को हम यहाँ पर बतौर मिसाल आप की ख़िदमत में पेश कर रहे हैं:

1 अल बिदायतु वल निहाया, जिल्द 13, पेज 207 (यह वाक़ेआ 654 हिजरी का है)

अब्दुल मोमिन के लिये अज़ादारी:

अब्दुल मोमिन बिन ख़ल्फ़ (वफ़ात 346 हिजरी) अहले सुन्नत के मशहूर फुक़हा (मुफ़्ती) में से थे. नसफ़ी ने उन के बारे में लिखा है:

मैंने अब्दुल मोमिन के तशई-ए-जनाज़े में शिरकत की तो तबलों के बजने की आवाज़ (जो ग़म में बजाएँ जाते है) इस तरह कानों में गूँज रही थी कि गोया किसी फ़ौज ने बग़दाद पर हमला कर दिया हो, यह सिलसिला जारी रहा यहाँ तक कि लोग नमाज़े मय्यत के लिये आमादा हो गये.[1]

इमाम जुवैनी पर मातम:

इमाम ज़हबी ने इमाम जुवैनी की वफ़ात और उन की सोगवारी से मुतअल्लिक़ इस तरह लिखा है:

पहले तो उन्हें अपने घर में ही दफ़्न किया गया मगर फिर उन का जनाज़ा मक़बर-ए-हुसैन (शायद करबला-ए-मुअल्ला) मुन्तक़िल कर दिया गया, इस

---

1 तारीख़ो मदीनते दमिश्क़, इब्ने असाकिर, जिल्द 10, पेज 272 / सियरु आलामिन नुबला, जिल्द 15, पेज 480

के मातम में लोगों ने मिम्बर तोड़ डाला, बाज़ार बन्द कर दिये और बहुत ज़ियादा मरसिया ख़्वानी की गयी, उन के 400 शार्गिद थे जिन्होंने उन के सोग में अपने क़लमदान तोड़ डाले और एकसाल तक उन की अज़ादारी जारी रही और एकसाल तक अपने सरों से अम्मामें उतार दिये यहाँ तक कि किसी की जुर्रत नहीं हुई थी कि सर पर अम्मामें रखे. वह इस मुद्दत में गली कूचों में निकल कर नौहा ख़्वानी करते और गिरया व ज़ारी करते हुए फ़रयाद बुलन्द किया करते थे.[1]

इब्ने जौज़ी पर सोग:

सिब्ते इब्ने जौज़ी ने 13 रमज़ान को वफ़ात पायी, इमाम ज़हबी ने उन की वफ़ात के मुतअल्लिक़ लिखा है:

उन की वफ़ात पर बाज़ार बन्द हो गये और लोगों की बहुत बड़ी तादाद ने उन के तशई-ए-जनाज़े में

1 सियरु आलामिन नुबला, जिल्द 18, पेज 468 / अल मुन्तज़म, जिल्द 9, पेज 20

शिरकत की, लोगों की बहुत बड़ी भीड़ और गर्मी की शिद्दत की वजह से लोगों ने अपने रोज़े तोड़ डाले और कुछ ने अपने आप को नहरे दजला में गिरा दिया... लोग रमज़ान के आख़िर तक उन की क़ब्र पर शब्बेदारी करते रहे. वह लोग शमा, चिराग़, क़न्दील लेकर आते और वहाँ कुरआन ख़्वानी करते उन की मजलिसे सोगवारी रोज़े शंबे (शनिवार) को बरपा की जाती और ज़ाकिर व ख़ुतबा उन से मुतअल्लिक़ गुफ़्तगू करते. इस में बहुत ज़ियादा लोगों ने शिरकत की और मरसिया ख़्वानी की गई.[1]

आख़री बात

आख़िर में हम गुज़ारीश करेंगे कि एक मुसलमान के पास सुन्नते रसूले ख़ुदा (स) से बढ़कर किस की बात मोतबर (भरोसेमन्द) और अज़ीज़ है.

जब कि हमारे सय्यदो सरदार एक अमल को न फ़क़त यह कि जाएज़ क़रार दे रहे हैं बल्कि इस अमल की भरपूर ताईद और ताकीद फ़रमाकर इसे शरई हैसीयत भी अता फ़रमा रहे हैं.

---

1 सियरु आलामिन नुबला, जिल्द 18, पेज 379

यह वह सच्ची हक़ीक़त है जिस को तमाम आलमें इस्लाम ने अपनी तारीख़ी वहदत की किताबों में खुली और वाज़ेह अलफ़ाज में जगह दी है.

उम्मीद है इश्क़े रिसालत से सरशार तबीअतें इस सुन्नते मुस्तफ़ा (स) को अमली जामा पहनाने के लिये किसी कमज़ोर ईमान के ख़ुद साख़्ता फ़तवों की परवाह नहीं करेंगे क्योंकि हमारे लिये बस अल्लाह और उस का रसूल (स) काफ़ी है. ख़ुदावन्दे करीम आशिक़ाने ख़ुदा और रसूल (स) को ता क़यामत सलामत और शाद रखे.